SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

रश्मि मिश्रा, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
गुंजन शर्मा, शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
रश्मि मिश्रा, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
गुंजन शर्मा, शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 28/07/2022
Revised on : -----
Accepted on : 04/08/2022
Plagiarism : 09% on 29/07/2022

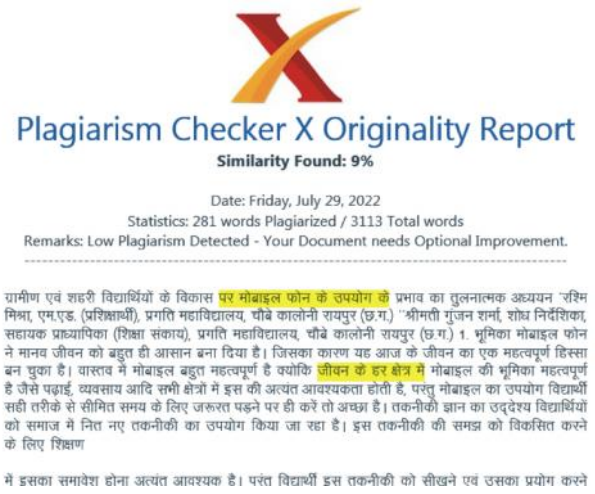

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 9%

Date: Friday, July 29, 2022
Statistics: 281 words Plagiarized / 3113 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन 'रश्मि मिश्रा, एम.एड. (प्रशिक्षार्थी), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) "श्रीमती गुंजन शर्मा, शोध निर्देशिका, सहायक प्राध्यापिका (शिक्षा संकाय), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) 1. भूमिका मोबाइल फोन ने मानव जीवन को बहुत ही आसान बना दिया है। जिसका कारण यह आज के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। वास्तव में मोबाइल बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जीवन के हर क्षेत्र में मोबाइल की भूमिका महत्वपूर्ण है जैसे पढ़ाई, व्यवसाय आदि सभी क्षेत्रों में इस की अत्यंत आवश्यकता होती है, परंतु मोबाइल का उपयोग विद्यार्थी सही तरीके से सीमित समय के लिए जरूरत पड़ने पर ही करें तो अच्छा है। तकनीकी ज्ञान का उद्देश्य विद्यार्थियों को समाज में नित नए तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है। इस तकनीकी की समझ को विकसित करने के लिए शिक्षण

में इसका समावेश होना अत्यंत आवश्यक है। परंत विद्यार्थी इस तकनीकी को सीखने एवं उसका प्रयोग करने

शोध सार

आज मोबाइल फोन सभी की जिंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। मोबाइल ने हर क्षेत्र में क्रांति ला दी है। अपने विभिन्न इस्तेमालों के कारण मोबाइल फोन काफी प्रचलित हो चुका है। समाज का हर वर्ग अपनी अपनी आवश्यकता के अनुसार इससे लाभ उठा रहा है। विद्यार्थी वर्ग भी इससे अछुता नहीं है। स्कूल कॉलेज विश्वविद्यालय हर स्तर के विद्यार्थी की पहली पसंद मोबाइल बन चुका है। उक्त महत्व को दृष्टिगत रखते हुये प्रस्तुत शोध ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। आंकड़े एकत्रित करने हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया जाता है। रायपुर के 4 विद्यालय में अध्ययनरत ग्यारहवी के 100 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। प्रत्येक विद्यालय में 25 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। कुल 4 विद्यालयों से 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन किया गया है जिसमें से 50 छात्र–छात्राएं ग्रामीण विद्यालयों से व 50 छात्र–छात्राएं शहरी विद्यालयों से लिया गया है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया, परिकल्पना की पुष्टि हुई। परिणामों में प्रदर्शित हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। शहरी छात्र–छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का सार्थक अंतर नहीं पाया गया। ग्रामीण छात्र–छात्राओं विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द

मोबाईल फोन, विद्यार्थी.

भूमिका

मोबाइल फोन ने मानव जीवन को बहुत ही आसान बना दिया है जिसके कारण यह आज के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। वास्तव में मोबाइल बहुत महत्वपूर्ण है क्योकि जीवन के हर क्षेत्र में मोबाइल की भूमिका महत्वपूर्ण है। जैसेः पढ़ाई, व्यवसाय आदि सभी क्षेत्रों में इस की अत्यंत आवश्यकता होती है, परंतु मोबाइल का उपयोग विद्यार्थी सही तरीके से सीमित समय के लिए जरूरत पड़ने पर ही करें तो अच्छा है। तकनीकी ज्ञान का उद्देश्य विद्यार्थियों को समाज में नित नए तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है। इस तकनीकी की समझ को विकसित करने के लिए शिक्षण में इसका समावेश होना अत्यंत आवश्यक है। परंतु विद्यार्थी इस तकनीकी को सीखने एवं उसका प्रयोग करने में मोबाइल फोन का इतना उपयोग कर रहे जिसका प्रभाव उनके विकास पर पड़ रहा है। अतः ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन शोध कार्य के रूप में चुना गया।

''मोबाइल का करो सीमित उपयोग,
लत है इसकी बुरी ना करो दुरूपयोग''

आज मोबाइल फोन सभी की जिंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। मोबाइल ने हर क्षेत्र में क्रांति ला दी है। अपने विभिन्न इस्तेमालों के कारण मोबाइल फोन काफी प्रचलित हो चुका है। समाज का हर वर्ग अपनी अपनी आवश्यकता के अनुसार इससे लाभ उठा रहा है। विद्यार्थी वर्ग भी इससे अछुता नहीं है। स्कूल कॉलेज विश्वविद्यालय हर स्तर के विद्यार्थी की पहली पसंद मोबाइल बन चुका है। आज विद्यार्थी मोबाइल पर इंटरनेट की मदद से कहीं भी बैठे वांछित सामग्री को डाउनलोड कर सके और उसका प्रिंट लेकर अपनी पढ़ाई को गति प्रदान कर रहा है। इसके अतिरिक्त देश–विदेश कॉलेजों में प्रवेश प्रतियोगिता परीक्षा परिणामों नौकरी आदि से संबंधित भरपूर जानकारी भी वह इसी से एकत्रित करता है। किंतु विद्यार्थियों का एक वर्ग ऐसा भी है जो इसका दुरूपयोग करता है। ऐसे विद्यार्थी आपस में घंटों बेकार में गप्पे हांकने, जरूरत से ज्यादा मैसेज भेजने, विडियोगेम खेलने चित्र खींचने और नए–नए मोबाइल खरीदने और उनकी ही बातें करते रहने में अपना समय बर्बाद करते है। अतः ऐसे विद्यार्थियों को इसकी उपादेयता समझनी चाहिए और उसका सदुपयोग करना चाहिए।

अध्ययन का महत्व

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। छात्र–छात्राओं की क्रियाशीलता सदैव किसी उद्देश्य की प्राप्ति की और उन्मुख रहती है, जो शिक्षा के उद्देश्य प्रक्रिया होने का आधार है। शिक्षा के माध्यम से अपने लक्ष्यों की प्राप्ति होती है इसलिए जीवन की पूर्णता के लिए उसके लक्ष्यों को समन्वय शिक्षा के उद्देश्यों के साथ होना अनिवार्य है। विचार एवं सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप जीवन के लक्ष्य बदलते है जैसा कि वर्तमान में छात्र–छात्राओं के अपनी शिक्षा को पूर्ण करने के लिए मोबाइल फोन का सहारा लेना पड़ता है जिससे विद्यार्थियों में सोचने व रचनात्मकता का अभाव आता जा रहा है।

पूर्व में किए गए शोध कार्य

भारत तथा विदेश में जो पूर्व में शोध कार्य किये गये है उनका विवरण निम्ननुसार हैः

भारत में किए गए शोध अध्ययन

पुंडीर शारदा (2019) भारतीय परिवारों में मोबाइल फोन का उपयोग और पारिवारिक और सामाजिक संबंधों का इस पर प्रभाव। वर्तमान अध्ययन ने भी आत्मसमान के कारण महत्वपूर्ण अंतर की पुष्टि की निम्न, मध्यम और

उच्च मोबाइल फोन उपयोग कर्ताओं के बीच मोबाइल फोन उपयोगकर्ताओं की संख्या। इसलिए द्वितीय परिकल्पना का भी सत्यापन किया गया। 3) वर्तमान शोध निम्न, मध्यम और बीच महत्वपूर्ण अंतर की पुष्टि करता है। व्यक्तिगत, सामाजिक और सामूहिक पहचान पर उच्च मोबाइल फोन उपयोगकर्ता पर प्रकार तीसरा परिकल्पना की भी पुष्टि की गई। 4) अंत में यह भी अनुमान लगाया गया कि महत्वपूर्ण लिंग अंतर होंगे मोबाइल उपयोग, व्यक्तित्व, आत्मसम्मान और सामाजिक पहचान पर जो आंशिक रूप से सत्यापित किया गया था।

रेखा रानी (2020) वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में मोबाइल फोन के उपयोग के संबंध मं अध्ययन की आदतें सामाजिक क्षमता और सामान्य स्वास्थ्य। स्कूलों को अपने पाठयक्रम में मीडिया साक्षरता को शामिल करना चाहिए। मोबाइल फोन के जोखिमों और लाभों के बारे में छात्रों को शिक्षित करने का आदेश और इंटरनेट का उपयोग। ये कार्यक्रम छात्रों को पहचानने में मदद करेंगे, इंटरनेट पर जानकारी को धोखा देना, अवांछित संदेशों को रोकना, फेककॉल्स को ब्लॉक करें और गैर–मान्यता प्राप्त वेबसाइटों पर कभी भरोसा न करें। मोबाइल फोन के उचित उपयोग पर उन्मुखीकरण कार्यक्रम हो सकते हैं स्कूल प्रशासन और सरकार को छात्रों के लिए आयोजित अधिकारी समय–समय पर स्कूल काउंसलर को उचित परामर्श सेवाएं प्रदान करनी चाहिए। मोबाइल फोन के उपयोग और अध्ययन की आदतों पर इसके प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करना, सामाजिक क्षमता और छात्रों की सामान्य भलाईं छात्र उनके अनुसार इन सेवाओं का बार–बार लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जरूरत है, ताकि वे जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें।

विदेशों में किए गए शोध अध्ययन

विलियम लिंच (2015) शैक्षिक प्रतिष्ठा में मोबाइल को सकारात्मक रूप से देखा गया है लेकिन राष्ट्र की वृद्धि या उन्नति एवं सब व्यवहार दृष्टिगोचर में नकारात्मक रहा है। निष्कर्षः बच्चों के वृद्धि के उपयोग एवं शिखर पर मोबाइल का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

मो. अतीकुर रहमानी मो. अशरफुल इस्लाम (2016) सामाजिक जीवन पर मोबाइल संचार प्रणाली के प्रभाव पर तुलनात्मक अध्ययन। निष्कर्षः आज कल लोगों को सूचना, मनोरंजन और कई दैनिक उपयोगिताओं के लिए मुख्य साधन और संसाधन एक है। इंटरनेट कनेक्शन वाला स्मार्टफोन। बांग्लादेश में, मोबाइल ऑपरेटरों और उद्योग ने बड़ी संख्या में एक निर्माण किया है। रोजगार और सकल घरेलू उत्पाद में एक उत्कृष्ट योगदान। अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि अधिकांश उपयोगकर्ता को हल्की लत और खर्च है। ऑनलाइन में अतिरिक्त समय, यही कारण है कि परिवार और दोस्तों के साथ उनका संचार मात्रा और दोनों में कम हो गया है गुणवत्ता। वे मोबाइल फोन माध्यम से लोगों से संवाद करने पर अधिक निर्भर होते जा रहे है। अकेलापन और अवसाद आज एक प्रमुख मुद्दा है इनमें से एक उल्लेखनीय मामला उथले और असंगत ऑनलाइन से जुड़ा है।

समस्या का कथन

''ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।''

प्रकार्यात्मक परिभाषा

मोबाइल फोनः मोबाइल एक ऐसी वस्तु है जिस पर विद्यार्थी स्वतः ही आकर्षित हो जाते है। इसका उपयोग कर विद्यार्थी अपने विचारों और सूचनाओं का आदान–प्रदान करते है। वृद्धि के साथ–साथ शारीरिक एवं मानसिक व्यवहार में होने वाला परिवर्तन विकास कहलाता है। यह परिवर्तन निरंतर चलता रहता है। अतः विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

विद्यार्थीः विद्यार्थी अर्थात् ''विद्या चाहने वाला''। विद्यार्थी वह व्यक्ति होता है जो कोई चीज सीख रहा होता है। विद्यार्थी किसी भी आयुवर्ग का हो सकता है। बालक किशोर युवा लोग किन महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कुछ सीख रहा होना चाहिए।

अध्ययन का उद्देश्य

- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का अध्ययन।
- ग्रामीण एवं शहरी बालक के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का अध्ययन।
- ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का अध्ययन।
- शहरी बालक–बालिकाओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का अध्ययन।
- ग्रामीण के बालक–बालिकाओं विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न परिकल्पनाएं हैं:

H_1 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_2 ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_3 ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_4 शहरी छात्र–छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_5 ग्रामीण छात्र–छात्राओं विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन की परिसीमा

समस्या तथा अध्ययन के व्यापक क्षेत्र को सीमित करना है। शिक्षा तथा ज्ञान की सीमा अत्यंत विस्तृत है। किसी भी समस्या का अध्ययन व्यापक यह समय रूप से करना संभव नही क्योंकि इसमें समय और श्रम अधिक लगता है।

समस्या के अध्ययन हेतू व्यापक क्षेत्र को सीमित करना ही परिसीमन है इसलिए व्यापक क्षेत्र को सीमा बंद करना आवश्यक है जिसमें समय और श्रम दोनों की बचत हो।

अतः शिक्षा के गुणोत्तर विकास को दृष्टिगत रखते हुए समय तथा साधना को ध्यान में शोधकर्ता हेतु परिसीमा निर्धारित की गई है।

शोध की परिसीमा निम्नलिखित निर्धारित की गई है:

- शोधकर्ताओं ने अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से रायपुर शहर का चयन किया है।
- रायपुर जिले के 2 शहरी एवं 2 ग्रामीण शालाओं का अध्ययन किया गया।
- आंकड़ों के संग्रहण हेतु 25–25 बालक–बालिकाओं का ग्रामीण शालाओं से 25–25 बालक–बालिकाओं का शहरी शालाओं से चयन किया गया।

शोध विधि

प्रस्तुत समस्या का उद्देश्य मोबाइल के उपयोग का प्रभाव का अध्ययन करना है। अतः आंकडे एकत्रित करने हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया जाता है।

न्यादर्श

रायपुर के 4 विद्यालय में अध्ययनरत् ग्यारहवी के 100 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है प्रत्येक विद्यालय में 25 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। कुल 4 विद्यालयों से 50 छात्र एवं 50 छात्रा का चयन

किया गया है जिसमें से 50 छात्र–छात्राएं ग्रामीण विद्यालयों से व 50 छात्र–छात्राएं शहरी विद्यालयों से लिया गया है।

चर

आश्रित चरः ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी।

स्वतंत्र चरः मोबाइल फोन का उपयोग।

उपकरण

प्रस्तुत शोध मे शोधकर्ता द्वारा जिस समस्या का चयन किया उसके लिए उपयुक्त उपकरण उपलब्ध नहीं था। इसलिए शोधकर्ता के द्वारा स्वनिर्मित उपकरण बनाया गया। इस उपकरण में 18 प्रश्न मोबाइल के संबंध में रखे गए।

सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया हैं:

मध्यमान (M) $M = \frac{\Sigma X}{N}$

मानक विचलन (S. D)= S.D. $= \sqrt{\frac{\sum d^2}{N}}$

क्रांतिक अनुपात(C.R) = $CR = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$

टी परीक्षण (t) = $\frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\Sigma d_1^2 + \Sigma d_2^2}{N_1 + N_2 - 2} + \frac{N_1 + N_2}{N_1 \times N_2}}}$

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

परिकल्पना क्रमांक 1

H_1 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 1: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का चर, मध्यमान, प्रमाप विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	CR मूल्य	सार्थकता
ग्रामीण विद्यार्थी	50	35.92	11.97	0.74	सार्थक नहीं
शहरी विद्यार्थी	50	34.14	11.89		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

व्याख्या

उपरोक्त सारणी के आधार पर ग्रामीण विद्यार्थी के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य 35.92 और प्रमाप विचलन 11.97 है तथा शहरी विद्यार्थी के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य 38.96 और प्रमाप विचलन 11.68 है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में ग्रामीण विद्यार्थी के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य शहरी विद्यार्थी की अपेक्षा कम है, अतः माध्यों में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने लिए CR परीक्षण किया गया जिसका मूल्य

0.74 है। t परीक्षण सारणी 98 df पर .01 स्तर पर टेबल मूल्य 2.68 व .05 स्तर पर 2.01 है। गणना मूल्य सारणी मूल्य से कम है। सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – H_1 ''ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।'' परिकल्पना की पुष्टि हुई।

आरेख क्रमांक 1: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का चर, मध्यमान एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

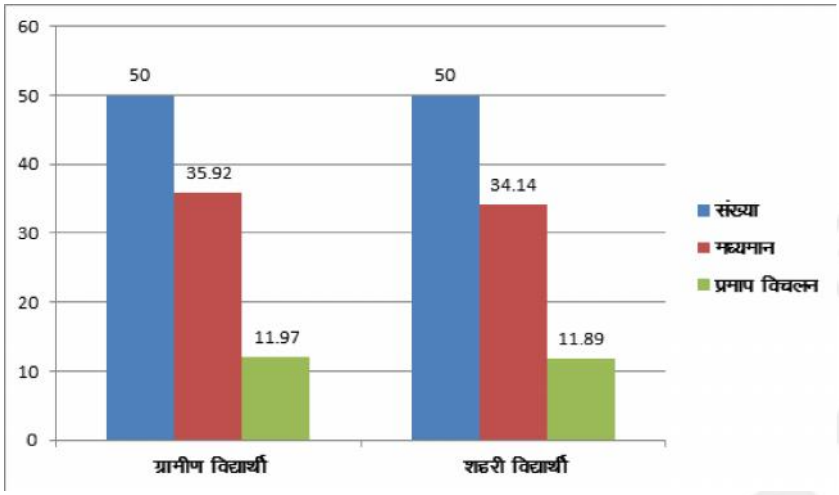

परिकल्पना क्रमांक 2

H_2 ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 2: ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का चर, मध्यमान, प्रमाप विचलन, t अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t मूल्य	सार्थकता
ग्रामीण छात्र	25	35.48	11.59	0.79	सार्थक नहीं
शहरी छात्र	25	37.42	12.79		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

व्याख्या

उपरोक्त सारणी के आधार पर ग्रामीण छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य 35.48 और प्रमाप विचलन 11.59 है तथा शहरी छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य 37.42 और प्रमाप विचलन 12.79 है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में ग्रामीण छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य शहरी छात्रों की अपेक्षा कम है अतः माध्यों में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने लिए t परीक्षण किया गया जिसका मूल्य 0.79 है। t परीक्षण सारणी 48 df पर .01 स्तर पर टेबल मूल्य 2.68 व .05 स्तर पर 2.01 है। गणना मूल्य सारणी मूल्य से कम है। सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, अतः परिकल्पना क्रमांक – H_2 ''ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।'' परिकल्पना की पुष्टि हुई।

आरेख क्रमांक 2: ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का चर, मध्यमान एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

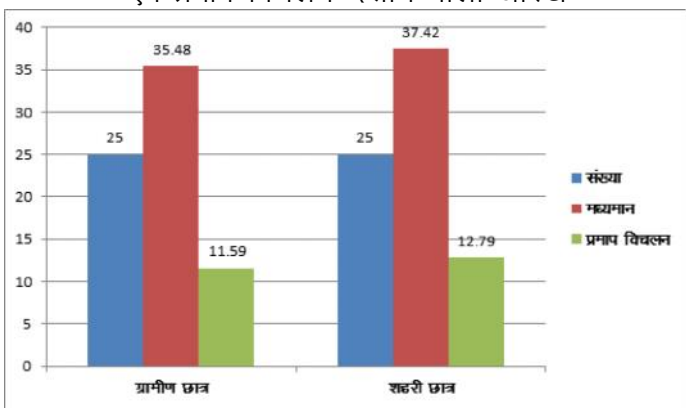

परिकल्पना क्रमांक 3

H_3 ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 3: ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का चर, मध्यमान, प्रमाप विचलन, t अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t मूल्य	सार्थकता
ग्रामीण छात्राएं	25	35.92	11.97	1.28	सार्थक नहीं
शहरी छात्राएं	25	38.96	11.68		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

व्याख्या

उपरोक्त सारणी के आधार पर ग्रामीण छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य 35.92 और प्रमाप विचलन 11.97 है तथा शहरी छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य 38.96 और प्रमाप विचलन 11.68 है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में ग्रामीण छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य शहरी छात्राओं की अपेक्षा कम है अतः माध्यों में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने लिए ज परीक्षण किया गया जिसका मूल्य 1.28 है। t परीक्षण सारणी 48 df पर .01 स्तर पर टेबल मूल्य 2.68 व .05 स्तर पर 2.01 है। गणना मूल्य सारणी मूल्य से कम है। सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – H_3 ''ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।'' परिकल्पना की पुष्टि हुई।

आरेख क्रमांक 3: ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का चर, मध्यमान एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

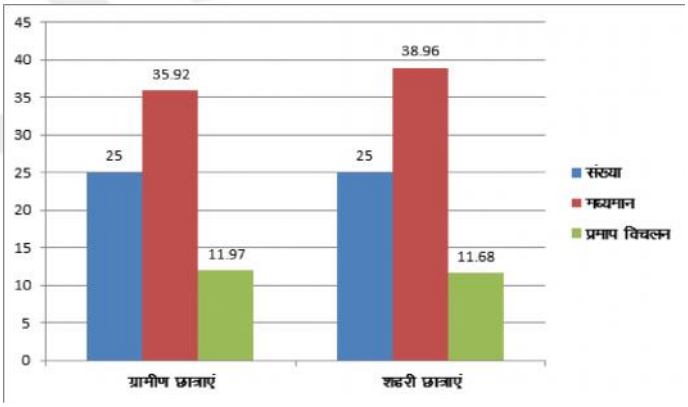

परिकल्पना क्रमांक 4

H_4 शहरी छात्र–छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 4: शहरी छात्र–छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का चर, मध्यमान, प्रमाप विचलन, t अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t मूल्य	सार्थकता
शहरी छात्र	25	38.96	11.68	2.20	सार्थक नहीं
शहरी छात्राएं	25	34.68	10.31		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

व्याख्या

उपरोक्त सारणी के आधार पर शहरी छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य 38.96 और प्रमाप विचलन 11.68 है तथा शहरी छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य 34.68 और प्रमाप विचलन 10.31 है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शहरी छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य शहरी छात्राओं की अपेक्षा कम है अतः माध्यों में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने लिए t परीक्षण किया गया जिसका मूल्य 2.20 है। t परीक्षण सारणी 58 df पर .01 स्तर पर टेबल मूल्य 2.68 व .05 स्तर पर 2.01 है। गणना मूल्य सारणी मूल्य से कम है। सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – H_4 ''शहरी छात्र–छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।'' परिकल्पना की पुष्टि हुई।

आरेख क्रमांक 4: शहरी छात्र–छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का चर, मध्यमान एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

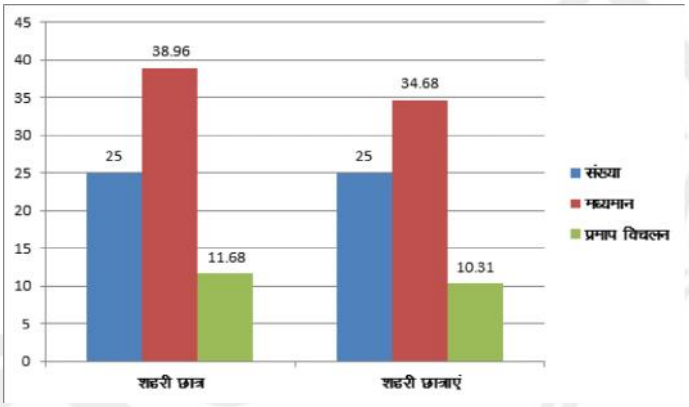

परिकल्पना क्रमांक 5

H_5 ग्रामीण छात्र–छात्राओं विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक 5: ग्रामीण छात्र–छात्राओं विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का चर, मध्यमान, प्रमाप विचलन, t अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	t मूल्य	सार्थकता
ग्रामीण छात्र	25	34.14	11.89	1.33	सार्थक नहीं
ग्रामीण छात्राएं	25	37.42	12.79		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

व्याख्या

उपरोक्त सारणी के आधार पर ग्रामीण छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य 34.14 और प्रमाप विचलन 11.89 है तथा ग्रामीण छात्राओं के विकास मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य 37.42 और प्रमाप विचलन 12.79 है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में ग्रामीण छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के प्रभाव का माध्य ग्रामीण

छात्राओं की अपेक्षा कम है अतः माध्यों में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने लिए t परीक्षण किया गया जिसका मूल्य 1.33 है। t परीक्षण सारणी 58 df पर .01 स्तर पर टेबल मूल्य 2.68 व .05 स्तर पर 2.01 है। गणना मूल्य सारणी मूल्य से कम है। सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – H_5 ''ग्रामीण छात्र–छात्राओं विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।'' परिकल्पना की पुष्टि हुई।

आरेख क्रमांक 5: ग्रामीण छात्र–छात्राओं विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का चर, मध्यमान एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

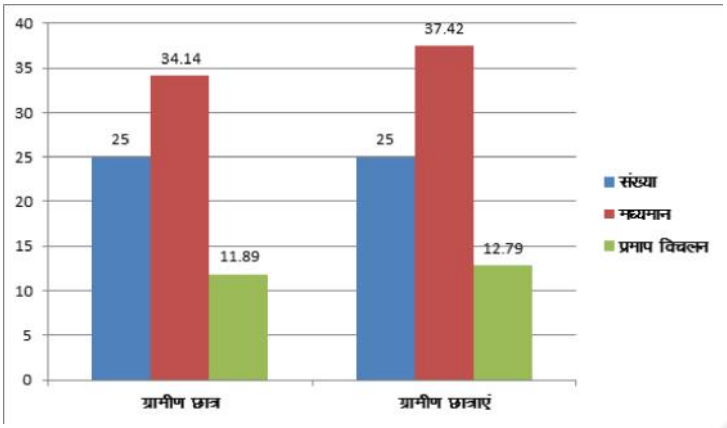

निष्कर्ष

परिकल्पना क्रमांक H_1: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक H_2: ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक H_3: ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक H_4: शहरी छात्र–छात्राओं के विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव का सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक H_5: ग्रामीण छात्र–छात्राओं विकास पर मोबाइल फोन के उपयोग के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना की पुष्टि हुई।

सुझाव

- मोबाइल फोन विद्यार्थियों के लिए लाभकारी है, इसके द्वारा उनमें पढ़ने की रूचि उत्पन्न की जानी चाहिए।
- मोबाइल फोन की कुछ हानियां भी हैं, जैसे– अशलील विडियो, हिंसक सामग्रियां आदि, इसलिए इन हानियों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।
- शिक्षकों को पढ़ाई के दौरान मोबाइल फोन का प्रयोग करना चाहिए, ताकि किसी कठिन विषय–वस्तु को सरल करके पढ़ाया जा सके।
- विद्यार्थियों से मोबाइल फोन में किसी विषय वस्तु की खोज कराएं ताकि स्व–अध्ययन को प्रोत्साहित किया जा सके।
- मोबाइल फोन के माध्यम से विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करानी चाहिए।
- विद्यार्थियों को मोबाइल फोन उपयोग करने का एक निश्चित समय देना चाहिए। साथ ही यह भी देखते रहना चाहिए कि वे क्या कर रहे हैं।

- मोबाइल के माध्यम अभिभावक अपने बच्चे में मूल्यो को विकास कर सकते है तथा उनका सृजनात्मकता प्रवृत्ति को आगे बढ़ा सकते है।

अनुकरणीय अध्ययन

- महाविद्यालयीन स्तर के छात्र तथ छात्राओ के मानसिक स्वास्थ्य परमोबाइल देखने के प्रभाव का अध्ययन।
- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मोबाइल के प्रभाव का अध्ययन।
- मोबाइल देखने से प्राथमिक स्तर के बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर मोबाइल के प्रभाव का अध्ययन।
- माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर के बालको पर हिंसात्मक कार्यक्रमो के प्रभाव का अध्ययन।
- पिछड़े विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने में मोबाइल फोन की भूमिका का अध्ययन।
- प्रतियोगी परीक्षाओं में विद्यार्थियों की सफलता में मोबाइल फोन की भूमिका का अध्ययन।
- विद्यार्थियों का बाह्य परिवेश से अलगाव में मोबाइल फोन की भूमिका का अध्ययन।

संदर्भ सूची

1. अस्थाना विपिन; श्रीवास्तव विजय एवं अस्थाना, निधि (2012–13) *''शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी'',* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. सं. (150–152)।
2. अस्थाना विपिन (2012–13) *''शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी'',* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. सं. (279–291)।
3. मिश्रा बब्बन, त्रिपाठी एल.बी. (1994) *''मनोवैज्ञानिक सांख्यिकी'',* हर प्रसार भार्गव, पृ. सं. (201–202)।
4. शर्मा राजकुमारी, शर्मा एच. एस. (2011) *''उच्चतर शैक्षिक मनोविज्ञान'',* राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा, पृ. सं. (1,2)।
5. शर्मा आर. के. ए, बरौलिया ए. एवं पाण्डेय आर. पी. (2010) *''शिक्षा मनोविज्ञान'',* राधा पब्लिकेशन, आगरा, पृ. सं. (4,5)।
6. Alfwach, H. M., Jusoh, S. (2016) Smart phone usagea mong university students: Najran University case, www.researchgate.net/ publication/261874520
7. Vaidya, A., Pathak, V., Vaidya, a. (2016) Mobile phone usagea mong youth, www.researchgate.net
8. Victor (2016). Importance of Smartphone in our daily life, http://www.importantindia.com

****